एक चील जो चाँद पे अण्डे देती थी...

एक चील थी उड़ने की
शौकीन बहुत थी
उड़कर पाकिस्तान से
बन्दी चीन पहुँचती

ऊँचा उड़ती तो आसमान
नीचे रह जाता था
चाँद आ गया
कोई तारा उसे बताता था

थक जाती तो रात
चाँद पर ही रुक जाती
उसे ढूँढने उसकी माँ
हर ऊँचे पेड़ पे जाती

उसके साथी सभी
परिन्दे उसे चिढ़ाते हैं
कि एक जनाब तो अण्डे
देने चाँद चले जाते हैं

• सुशील शुक्ल

चित्र : अतनु राय